بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-08.03.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की क़बूलियत तथा सहाबा रज़ी. एवं सहाबियात रज़ी. के बलिदानों और इश्क़े रसूल स. के ईमान वर्धक वृत्तांत।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 08 मार्च 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- ओहद के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की क़बूलियत जो आप स. ने अपने सहाबी हज़रत सअद रज़ी. की दुआ की क़बूलियत के लिए की थी, उस घटना का यूँ वर्णन मिलता है। आयशा सुपुत्री सअद रज़ी. ने अपने पिता जी हज़रत सअद रज़ी. से रिवायत किया है, वे फ़रमाते हैं कि जब लोगों ने पलट कर हमला किया ता मैंने कहा कि इन लोगों को मैं स्वयं हटा दूँगा, या तो मैं स्वयं मुक्ति पा जाउंगा या मैं शहीद हो जाउंगा। सहसा मैंने एक लाल चेहरे वाले व्यक्ति को देखा तथा सम्भव था कि मुशरिक उन पर ग़ालिब हो जाँए तो उस व्यक्ति ने अपना हाथ कंकरियों से भर कर उनको मारा तो अचानक मेरे तथा उस व्यक्ति के बीच मिक़दाद रज़ी.आ गए। उन्होंने कहा कि ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे और तुझे बुला रहे थे। मुझे ऐसा लगा कि मानो मुझे कोई पीड़ा ही नहीं हुई। मैं एकदम खड़ा हुआ और आप स. के पास आया, आप स. ने मुझे अपने सामने बिठा लिया। मैं तीर मारने लगा तथा मैं कहता कि ऐ अल्लाह, तेरा तीर है, तू इसको अपने दुशमन को मार दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते कि ऐ अल्लाह, तू सअद रज़ी. की दुआ क़बूल कर ले। ऐ अल्लाह! सअद के निशाने को सटीक कर दे। ऐ सअद, तुझ पर मेरे माँ और बाप फ़िदा हां। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इसके विषय में लिखा है कि सअद बिन वक़्क़ास रज़ी.अपने अन्तिम समय तक इन शब्दों को अत्यंत गौरव के साथ बयान किया करते थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार हज़रत उमर रज़ी. ने काफ़िरों के हमले को किस प्रकार असफल बनाया, इस बारे में यूँ वर्णन मिलता है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबियों की जमाअत के साथ चट्टान पर विश्राम कर रहे थे अचानक ख़ालिद बिन वलीद के नेतृत्व में क़ुरैश का एक दल पहाड़ के ऊपर पहुंच गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुशमन को ऊपर देख कर दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह, इनके लिए वैध नहीं कि वे हम पर ग़ालिब आएँ। ऐ अल्लाह, हमारा सार्म्थय नहीं तथा हम शक्तिशाली नहीं, किन्तु केवल तेरे द्वारा। उसी समय हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी. ने महाजिरों की एक जमाअत के साथ उन लोगों का मुक़ाबला किया तथा उन्हें पीछे धकेल कर पहाड़ी से नीचे उतरने पर विवश कर दिया। इस घटना के बारे में अल्लाह तआला का यह इरशाद अवतरित हुआ- وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ अर्थात- और कमज़ोरी न दिखाओ और ग़म न करो जबकि निःसन्देह तुम ही ग़ालिब आने वाले हो, यदि तुम मोमिन हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ख़मी होने के बावजूद सहाबा रज़ी. की चिंता करने के बारे में हज़रत आयशा रज़ी. कहती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. जब ओहद दिवस का वर्णन करते ता फ़रमाते कि वह दिन पूरे का पूरा तलहा रज़ी. का था। फिर इसको सविस्तार बताते कि मैं उन लोगों में से था जो ओहद के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर वापस लौटे थे। मैंने देखा आप स. का निचला चौथा दांत टूट चुका था एवं चेहरा घाव युक्त था और आप स. के पवित्र गाल में युद्ध कवच की कड़ियाँ धंस चुकी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- तुम अपने साथी अर्थात तलहा रज़ी. की सहायता करो। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- ये घटनाएँ पहले भी बयान कर चुका हूँ, इनमें से कुछ में कोई नई बात होती है, कुछ नए वाक्य होते हैं, कुछ और नई शैली होती है, इस लिए दोबारा बयान कर देता हूँ।

मदीने की महिलाओं के धैर्य एवं संतोष के नमूनों के बारे में कुछ उदाहरण हैं। ओहद की लड़ाई के बाद जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने लौटे तो हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ी. की पतनी हमना सुपुत्री जहश रज़ी. को लोगों ने उन्हें उनके भाई तथा मामू की शहादत की सूचना दी, तो उन्होंने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा, परन्तु जब उनके पति के शहीद होने की ख़बर दी तो वे रोने लगीं तथा व्याकुल हो गईं और कहा, हाए अफ़सोस। आप स. के पूछने पर कि तू ने ऐसे शब्द क्यूँ कहे, हमना ने कहा कि केवल पति के लिए कहा, मुझे उसके बच्चों का अनाथ होना याद आ गया था जिससे मैं दुःखी हो गई तथा परेशानी की अवस्था में यह वाक्य मेरे मुंह से निकल गया। यह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुस्अब रज़ी. की संतान के लिए दुआ की। ऐ अल्लाह, इनके अभिभावक एवं बुज़ुर्ग इनके साथ स्नेह पूर्ण भावना करें तथा इनके साथ सद्व्यवहार से पेश आँए।

हज़रत हिन्द रज़ी. को जब अपने पति, भाई तथा बेटे की शहादत का पता चला कि तीनों शहीद हो गए, तो यह तीनों को ऊँटनी पर मदीना दफ़न करने के लिए ले जा रही थीं। ऊँट की दिशा जब मदीने की ओर की जाती तो वह बैठ जाता तथा जब ओहद की ओर करते तो वह जल्दी जल्दी चलने लगता। हज़रत

हिन्द रज़ी. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आईं तथा आप स. को इसकी सूचना दी तो आप स. ने फ़रमाया कि यह ऊँट नियुक्त किया गया है, अर्थात इसको अल्लाह तआला की ओर इसी काम पर लगाया गया था कि मदीने की ओर न जाए बल्कि ओहद की ओर रहे। आप स. ने फ़रमाया कि क्या तुम्हारे पति ने युद्ध पर जाने से पहले कुछ कहा था। हज़रत हिन्द रज़ी. ने कहा कि जब वे ओहद की ओर रवाना होने लगे तो उन्होंने क़िबले की ओर मुंह करके यह कहा था कि ऐ अल्लाह ! मुझे मेरे परिवार की ओर लज्जातमक रूप में न लौटाना तथा मुझे शहादत प्रदान करना। इस पर आप स. ने फ़रमाया कि इसी कारण से ऊँट नहीं चल रहा था। फ़रमाया कि ऐ अन्सार के गिरोह ! तुममें से कुछ ऐसे सज्जन पुरुष हैं कि यदि वे ख़ुदा की क़सम खा कर कोई बात करें तो ख़ुदा तआला उनकी वह बात अवश्य पूरी कर देता है तथा उमरू बिन जमूह रज़ी. भी उनमें से एक हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि दूसरे विश्व युद्ध में जर्मनी की एक बूढ़ी महिला का बेटा युद्ध में मारा गया था तथा उसने एक बनावटी ठहाका लगा कर इस ख़बर पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी तो उन दिनों में ख़बर आई कि देखो इस महिला ने कैसा धैर्य प्रकट किया है। आप रज़ी. न फ़रमाया कि उसने ठहाका तो लगाया परन्तु उसकी अभिव्यक्ति बोझ से दबी हुई लगती थी अर्थात दिल में वह रो रही थी किन्तु सहाबिया की घटना यह नहीं है कि उसने नियन्त्रण किया हुआ था और दिल में रो रही थी, बल्कि वह दिल में भी ख़ुश थी कि रसूले करीम सल्लल्लाह् अलैहि वसल्लम जीवित हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. कहते हैं कि मैं जब उस महिला की घटना पढ़ता हूँ तो मेरा दिल उसके सम्बंध में आदर एवं सम्मान से भर जाता है और मेरा दिल चाहता है कि मैं उस शुभ महिला के दामन को छू लूँ और फिर अपने हाथ आँखों से लगाऊँ कि उसने मेरे महबूब के लिए अपनी मुहब्बत की एक अनोखी यादगार छोड़ दी। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि यह मुहब्बत थी जो ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उन लोगों के दिलों में पैदा कर दी थी। ख़ुदा तआला के मुक़ाबले में वे माँ-बाप, बहन भाईयों, पतनियों तथा पतियों की चिंता नहीं करते थे। उनके सामने एक ही चीज़ थी और वह यह कि उनका ख़ुदा उनसे प्रसन्न हो जाए। इसी लिए अल्लाह तआला ने उनके लिए रज़ीयल्लाहु अन्हु फ़रमा दिया।

एक जीवन चरित्र लेखक लिखता है- निःसन्देह मदीने की कठिनाई अति कष्टदायक कठिनाई थी परन्तु मक्का और मदीने के बीच एक कठिनाई को सहन करने में दूर अति दूर का अन्तर था। मक्का के मुशरिकों ने अपनी बदर की कठिनाईयों को कुछ कमज़ोरी, व्याकुलता एवं शौर्य के साथ प्राप्त किया। ओहद में मुसलमानों को भी काफ़ी हानि हुई परन्तु उनकी यह हानि अद्वित्तीय धैर्य था, ईमान था एवं सुदृढ़ता एवं शौर्य था। मदीने की सेना को ओहद के युद्ध में जो हानि हुई उसके कारण मदीने के वासियों में से किसी में घबराहट, व्याकुलता तथा कमज़ोरी का कोई निशान नहीं था। शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

फ़लिस्तीन के लोगों के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनके लिए सुविधाएँ पैदा फ़रमाए। दुशमन तो अपनी पूरी घटिया सोचों तथा हरकतों के द्वारा उन्हें नष्ट करने पर तुला हुआ है। महा शक्तियाँ युद्ध को

रोकने के बजाए उसे हवा देने की कोशिश कर रही हैं। अतएव अल्लाह तआला ही है जो उनके हाथों को रोक सकता है, इस लिए बहुत दुआएँ करें।

इसी तरह जिस चेयरिटी संगठन के द्वारा उनको खाद्य सामग्री अथवा दवाईयाँ इत्यादि या किसी प्रकार सहायता मिल सकती है, वह अहमदियों को करनी चाहिए। अपने सर्किल में उनके समर्थन में अत्याचार को समाप्त करने के बारे में भी प्रयत्न करना चाहिए। पत्र लिखें राजनेताओं को तथा उन्हें समझाएँ कि जो भी तुम लोग कर रहे हो, बड़ा ग़लत कर रहे हो। फ़लिस्तीनियों को भी अल्लाह तआला दुआओं तथा अपनी रूहानी स्थितियों को बेहतर करने का सामर्थ्य प्रदान करे। यूकरेन तथा रूस के युद्ध में भी, जिसमें यूरोप और अमरीका के सीधे सम्मिलित होने की ख़बरें आ रही हैं, उससे भी विश्व युद्ध की आशंकाएँ और अधिक बढ़ रही हैं। उसके लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला दुनिया को विनाश से बचाए। सावधानी के उपाय करने के लिए मैंने पहले भी कहा था और मुझसे पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. भी एक नुस्ख़ा ऐटमी प्रभाव से बचने का दे चुके हैं। उसका भी कम से कम एक कोर्स तीन तीन ख़ुराकों का दोबारा कर लेना चाहिए। इसी तरह घरों में राशन भी दो तीन महीने का अहमदियों को रखना चाहिए तथा विशेष रूप से जहाँ सीधे रूप में युद्ध की आशंका है। युद्ध न भी हो तब भी इसका लाभ ही है। यमन के अहमदियों के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह उनकी रिहाई के जल्द सामान पैदा फ़रमाए। अल्लाह तआला दुनिया को यह भी बुद्धि दे कि वे उन्नति के नाम पर दुनिया की गन्दगियों में पड़ने के बजाए अल्लाह तआला की पहचान करें। मुस्लिम देशों को भी अल्लाह तआला न्याय पर स्थापित होकर एक होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमें तौफ़ीक़ दे कि हम अल्लाह तआला के पैग़ाम को हर एक व्यक्ति तक पहुंचाने वाल हों।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम ताहिर इक़बाल चीमा साहब सुपुत्र ख़िज़र हयात चीमा साहब, सदर जमाअत अहमदिया, चक चौरासी, फ़तहपुर ज़िला भावलपुर की शहादत का वर्णन फ़रमाया, जिनको पिछले दिनों शहीद कर दिया गया आर दुआ की, अल्लाह तआला शहीद मरहूम का स्तर बुलन्द फ़रमाए, रहमत व मग़फ़िरत का सलूक फ़रमाए, परिजनों को व्यापक संतोष प्रदान करे और उनकी नेकियाँ जारी रखने का सामर्थ्य प्रदान करे। हुज़ूरे अनवर ने जुम्अः की नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131